16 / 05 / 77 की अव्यक्त वाणी

पर आधारित योग अनुभूति

माया के वार का सामना करने का अनुभव

➢➢ माया के वार का सामना कर विजयी बनना..

➳ _ ➳ मैं आत्मा बैठी हूँ संगम के नाव में...

→ कलियुगी विषय सागर में डूबती हुई मुझ आत्मा को निकाल...

- संगम के नाव में बाबा ने बिठा दिया है...

  - और मैं चल पड़ी हूँ अपनी मंजिल की ओर...

➳ _ ➳ मेरी नैया की पतवार बाबा के हाथों में दे दी हूँ...

→ चैन से निश्चिन्त होकर संगम की नैया में बैठी हूँ...

→ क्योंकि इसकी पतवार स्वयं भगवान् के हाथों में है...

→ एक बाबा को स्नेह से निहार रही हूँ...

→ अपनी बुद्धि को एक बाबा में एकाग्र कर रही हूँ...

→ एकरस स्थिति में स्थित हो रही हूँ...

- ना इस देह की सुध-बुध..
- ना इस दुनिया की सुध-बुध..
- ना लोकलाज की परवाह..
- बस मैं और मेरा बाबा..

  - बाबा मिला, सबकुछ मिला बस इसी खुमारी में स्थित हूँ...

➳ _ ➳ मीठे बाबा सर्व शक्तियों की किरणों की धारा मुझ पर बरसा रहे हैं..

→ बाबा के नैनों से, मस्तक से किरणें निकल मुझ पर पड़ रही हैं...

→ मैं आत्मा सुख, शांति, शक्तियों की अनुभूति कर रही हूँ...

→ खुशियों और उमंग-उत्साह में उड़ रही हूँ...

→ न्यारी बन बाबा की अति प्यारी बन रही हूँ...

➳ _ ➳ बाबा से मिली प्राप्तियों के आगे इस पुरानी दुनिया का सबकुछ तुच्छ अनुभव हो रहा है...

→ तन, मन, धन, सम्बन्धों का त्याग, त्याग नहीं लग रहा...

→ अविनाशी प्राप्तियों के आगे ये विनाशी चीजें कुछ भी नहीं...

→ अपने पुराने जीवन और इस अलौकिक ब्राहमण जीवन के महान अंतर को स्पष्ट अनुभव कर रही हूँ...

→ दिल से कह रही हूँ- बाबा... मैं आपकी हूँ...

→ बाबा भी कह रहे- बच्चे... 'जो बाप का सो आपका'

→ भगवान के सारे खजाने, गुण, शक्तियां सब कुछ मेरे हैं...

- इसी नशे से अपने मंजिल की ओर तेजी से बढ़ रही हूँ...
- त्याग और लगन से आगे बढ़ने का पुरूषार्थ कर रही हूँ...

➳ _ ➳ मैं आत्मा त्रिकालदर्शी मास्टर ज्ञान सागर, मास्टर सर्वशक्तिवान की स्थिति में स्थित रहती हूँ...

→ महावीर, रूहानी योद्धा बन माया को चैलेंज कर रही हूँ...

→ सामना करने की शक्ति से माया के अनेक प्रकार के वार का सामना कर रही हूँ...

→ परखने की शक्ति से माया को दूर से ही पहचान रही हूँ...

→ मायावी आकर्षणों के जाल में नहीं फंस रही हूँ...

→ परखने की शक्ति से राईट और रांग को जान रही हूँ...

→ निर्णय करने की शक्ति से सही निर्णय कर रही हूँ...

→ सदा समर्थ संकल्प कर बुद्धि को भटकने नहीं देती हूँ...

■ सहज ही मायाजीत बन रही हूँ...

➳ _ ➳ बाप को सदा अपना साथी बनाकर रास्ते के साइड सीन्स को पार कर रही हूँ...

→ रास्ते में आये हर साइड सीन रूपी परिस्थितियों को सहज ही पार कर रही हूँ...

→ जरा भी व्यर्थ संकल्पों की हलचल में नहीं आती हूँ...

→ परिस्थिति रूपी आंधी और तूफ़ान को देख घबराती नहीं हूँ...

→ सदा इसी स्मृति में रहती हूँ की मेरी नैया का खिवैया स्वयं भगवान है तो कभी डूब नहीं सकती है...

→ भगवान को अपना साथी बनाकर हर मुश्किल को सहज पार कर रही हूँ...

→ सी फादर, फॉलो फादर कर सदा उमंग उत्साह में रहती हूँ...

→ हिम्मतवान बन बाबा की मदद का अनुभव कर रही हूँ...

→ रास्ते के नजारों को देख कभी रुक नहीं जाती हूँ...

■ रास्ते चलते कोई व्यक्ति वा वैभव को आधार नहीं बनाती हूँ...

■ 'एक बल एक भरोसा' इस पाठ को सदा पक्का रख बीच भँवर से सहज निकल रही हूँ...

■ सदा आगे ही आगे बढ़कर मंजिल को समीप अनुभव कर रही हूँ...